प्राणीशास्त्र विभाग
वार्षिक प्रतिवेदन 2024-25

1. **स्थापना वर्ष :-** स्नातक 1957, स्नातकोत्तर 1982.

2. **विशेषता क्षेत्र :-** स्नातक , स्नातकोत्तर प्राणीशास्त्र, स्नातक औधोगिक मत्स्य एवं माfत्स्यकी ।

3. **संचालित विषय :-** स्नातक, स्नातकोत्तर प्राणीशास्त्र , स्नातक औधोगिक मत्स्य एवं मा fत्स्यकी स्तर पर विषय का अध्यापन किया जाता है ।

4. **विभिन्न विषयों में आबंटित छात्र संख्या :-**

कक्षा / विषय	आबंटित छात्र	प्राप्त आवेदन	प्रवेशित छात्र
बी.एस.सी (FYUGP) प्राणीशास्त्र प्रथम सेमेस्टर	430	1900	430
बी.एस.सी (FYUGP) प्राणीशास्त्र तृतीय सेमेस्टर	430	267	267
बी.एस.सी (FYUGP) प्राणीशास्त्र पंचम सेमेस्टर	430	229	229
बी.एस.सी (FYUGP) IFF तृतीय सेमेस्टर	40	04	04
बी.एस.सी (FYUGP) IFF पंचम सेमेस्टर	40	08	08
एम.एस.सी. पूर्व प्राणीशास्त्र	40	451	40
एम.एस.सी.अंतिम प्राणीशास्त्र	40	36	36

5. **स्वीकृत पद की संख्या :-** 01 प्राध्यापक एवं 06 सहायक प्राध्यापक

6. **कार्यरत शिक्षक की संख्या :-** 07 ,06 नियमित 01 अतिथि सहायक प्राध्यापक

पद	संख्या	शिक्षक का नाम	वर्ग
सहायक प्राध्यापक	**06**	1. डॉ. किरण लता दामले	अनु.जाति
		2. डॉ. संजय ठिसके	सामान्य
		3. डॉ. माज़िद अली	सामान्य
		4. गुरप्रीत सिंह भाटिया	सामान्य
		5. चिरंजीव पाण्डेय	सामान्य

		6. करुणा रावटे	अनु. जनजाति
अतिथि प्राध्यापक	01	1. कु. जागृति चंद्राकर	अ.पि.व.

पाठ्यक्रम गतिविधियाँ

अध्ययन मंडल की बैठक (BOS) दिनांक 13/05/2024 को आयोजित की गई जिनमें निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की गई:

- स्नातकोत्तर प्रथम द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम को गत वर्ष अनुसार यथावत रखा गया।
- बीएससीप्राणी शास्त्र 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम FYUGP/LOCF प्रथम द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम को गत वर्ष अनुसार रखा गया पांचवी एवं छठवें सेमेस्टर में एक-एक DSC ,DSE,SEC एवं GE गया। जो LOCF Zoology UGC 2019 से लिया गया है।
- स्नातकोत्तर प्रथम द्वितीय तृतीयम चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम को गत वर्ष अनुसार रखा गया।
- बीएससी प्राणी शास्त्र 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के तृतीय चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम को गत वर्ष अनुसार रखा गया।
- इस वर्ष 2024 25 से छत्तीसगढ़ शासन द्वारा FYUGP/LOCF सेमेस्टर प्रणाली लागू कर दी गई है।
- बीएससी प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में पाठ्यक्रम को हेमचंद विश्वविद्यालय के अनुसाररखा गया।

- डॉ सीमा गुप्ता - शासकीय नागार्जुन विज्ञान महाविद्यालय रायपुर
- डॉ अजीत हुंडैत - शासकीय डीबी गर्ल्स कॉलेज रायपुर
- डॉ एस आर कन्नौजे - शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय राजनंदगांव
- श्री संदीप साहू - शासकीय नवीन महाविद्यालय सुकमा
- कु ऐश्वर्या सोनी - भूतपूर्व छात्र
- समस्त विभागीय प्राध्यापक

- **मासिक शैक्षणिक योजना :-** प्राणीशास्त्र विभाग के प्राध्यापकों के द्वारा स्वयं की दैनंदिनी में वार्षिक एवं मासिक शैक्षणिक योजना तैयार की जाती है।

- **फीडबैक छात्र छात्राएं :-** विभाग द्वारा स्नातक व स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं से ऑफलाइन एवं गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन फीडबैक भी लिया जाता है।

- **शिक्षण पद्धति :-** इंटरैक्टिव पैनल,एल.सी.डी.प्रोजेक्टर, ओव्हरहेड प्रोजेक्टर, कम्प्युटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से भी कक्षाए संचालित की जाती है।

- **प्रतियोगी परीक्षाओ हेतु मार्गदर्शन :-** स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं को नेट /सेट तथा पी .एस.सी. की कोचिंग व विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए समय -समय पर रोजगार मार्गदर्शन हेतु व्याख्यान व् कार्यशाला का आयोजन भी किया जाता है।

1. प्राणीशास्त्र विद्यार्थी परिषद् का गठन :-

प्राणीशास्त्र परिषद् का गठन दिनांक 05.09.2024 को गुणानुक्रम के आधार पर किया गया। प्राचार्य डॉ अंजना ठाकुर द्वारा नव-मनोनित पदाधिकारियों को शपथ दिलाया एवं अनुशाशित रहते हुए सर्वोत्तम प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित किया। छात्र परिषद का मुख्य कार्य विभागीय गतिविधि में सहयोग देना और विषय से संबधित विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन करना।

मनोनित पदाधिकारी:

अध्यक्ष - खिलेंद्र कुमार आल्हा

उपाध्यक्ष - कु. आशा साहू

सचिव - कु. हीना रजक

सह सचिव - पंकज कुमार वर्मा

को नियुक्त किया गया। छात्र परिषद का मुख्य कार्य विभागीय गतिविधि में सहयोग देना और विषय से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करना ।

प्राणीशास्त्र स्नातकोत्तर विद्यार्थी परिषद् का गठन

अतिथि व्याख्यान माला:

- **जागरूकता के आभाव में विलुप्त हो रहे विषहीन सर्प** :शासकीय दिग्विजय स्वाशासी महाविद्यालय राजनादगांव के प्राचार्य डॉ अंजना ठाकुर के कुशल मार्गदर्शन में तथा विभागाध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले के नेतृत्व में दिनाक 21 अक्टूबर 2025 को विश्व सरीसृप जागरूकता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ . माजिद अली ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ . किरण लता दामले ने सर्वप्रथम मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ देकर सम्मान करते हुए , मुख्य अतिथि का परिचय दिया तथा पर्यावरण एवं इकोसिस्टम के लिए उनके योगदान को इंगित किया। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध सरीसृप वैज्ञानिक डॉ एच .के.एस. गजेंद्र थे , वे डीएस शासकीय महाविद्यालय कसडोल से प्राचार्य पद से सेवा निवृत्ति हुए हैं। वह विगत 30 वर्षों से सर्पमित्र नामक एक एनजीओ संचालित कर रहे हैं। जिसके

द्वारा उन्होंने झारखंड , उडीसा, मध्यप्रदेश , छत्तीसगढ़ ,महाराष्ट्र , तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश के गांव तथा शहरों में छोटे-छोटे समूह बनाकर उन्हें सर्प पकड़ने तथा उनकी सुरक्षा और रेस्क्यू का प्रशिक्षण दिया। देश भर में 500 से अधिक ऐसे सर्प मित्र समूह न केवल सापों तथा अन्य बेजुबान जानवरों जो सड़कों पर घायल हो जाते हैं , बीमार हो जाते हैं, की सुरक्षा तथा देखभाल करते हैं।

डॉ. गजेंद्र ने अपने विस्तृत व्याख्यान में दिग्विजय महाविद्यालय के विद्यार्थियों को बताया कि सांपों का उत्पत्ति पहली बार लगभग 128 मिलियन वर्ष पहले दक्षिणी गोलार्ध के गर्म, वनीय पारिस्थितिकी तंत्र में भूमि पर हुआ था। वे संभवतः प्राचीन महाद्वीप लॉरेशिया से आये थे। ये अपनी जीभ से तथा अपने मुँह की छत में स्थित जैकबसन ऑर्गन से गंध सूंघते हैं। वे अपने आस-पास के अन्य जानवरों की गर्मी का पता लगा सकते हैं। साँप अपने निचले जबड़े से ज़मीन पर होने वाले कंपन को महसूस करके सुनते हैं। सांपों की पलकें नहीं होतीं , बल्कि उनके पास एक पारदर्शी परत होती है जो उनकी आंखों की रक्षा करती है और उन्हें खुली आंखें रखकर सोने में मदद करती है। उनके निचले जबड़े लचीले होते हैं, जिससे वे अपनी खोपड़ी से 75% से 100% बड़े आकार के जीवों को भी निगल सकते हैं। दुनिया भर में साँपों की 3,700 से अधिक प्रजातियाँ हैं।अस्तित्व में मौजूद कुछ सबसे विषैले साँप समुद्र में रहते हैं। साँप का जहर शिकार को स्थिर कर देता है और मांस को तोड़कर पाचन में सहायता करता है। सरीसृप इकोसिस्टम के खाद्य जाल में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं यदि सरीसृप ना हो तो पूरा एक सिस्टम ध्वस्त हो जाएगा तथा मनुष्य का पृथ्वी पर जीवित रहना कठिन हो जाएगा। अनजाने में हम सांपों को मार देते हैं जबकि 97% सांप ऐसे होते हैं जिनके काटने से मनुष्य की मृत्यु नहीं हो सकती , केवल तीन प्रतिशत सिर्फ ऐसे हैं जिनके काटने से मनुष्य की मृत्यु होती है किंतु सांप मनुष्य पर तभी हमला करता है जब उसे अपनी जान का खतरा होता है । अनजाने में हम सभी सांपों को खतरनाक समझकर मार देते हैं जो सीधे अपने पर्यावरण को हम नुकसान पहुंचाते हैं डॉ . गजेंद्र ने सांप काटने पर सर्वप्रथम क्या प्राथमिक उपचार करना चाहिए तथा उसे कैसे बचाव करना चाहिए , चलचित्रों के माध्यम से छात्रों को समझाया। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर संजय ठिसके ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम में प्रो . गुरप्रीत सिंह भाटिया, प्रो. चिरंजीव पाण्डेय, प्रो. करुणा रावटे , श्री एस .एल. देवांगन, श्री राहुल देवांगन , रितेश भान्डेकर ,सुमन रामटेके , प्रिया जायसवाल , मीनाक्षी देवांगन तथा एम् .एस.सी. पूर्व - अंतिम के समस्त विद्यार्थी एवं स्नातक स्तर के 500 से अधिक छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

विद्यार्थियों से

विषहीन सर्पो पर चर्चा करते डॉ गजेन्द्र

- **How we are Living ,how we maintain the Living system”** विषय पर व्याख्यान : दिनांक 24 नवंबर 2025 को डॉ अजीत हुंडैत, प्राध्यापक प्राणीशास्त्र शासकीय दूधाधारी बजरंग कन्या महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.) द्वारा “How we are Living ,how we maintain the Living system” विषय पर व्याख्यान दिया , उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि जीवित प्रणालियाँ कोशिकाओं , ऊतकों, अंगों और पारिस्थितिक तंत्र की अत्यधिक संगठित संरचनाएँ हैं। ये प्रणालियाँ चयापचय , होमियोस्टैसिस और प्रजनन जैसी मूलभूत प्रक्रियाओं द्वारा नियंत्रित होती हैं। उदाहरण के लिए , हमारा शरीर तापमान विनियमन और पी .एच. संतुलन जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से एक स्थिर आंतरिक वातावरण या होमोस्टैसिस बनाए रखता है। यह जटिल समन्वय हमें बेहतर ढंग से कार्य करने , बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने और बीमारियों से लड़ने की अनुमति देता है।लेकिन बड़ा जीवित तंत्र - ग्रह - भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पृथ्वी एक बंद प्रणाली है जहां परस्पर जुड़े पारिस्थितिकी तंत्र सूर्य से ऊर्जा और पानी, कार्बन और नाइट्रोजन जैसे संसाधनों के पुनर्चक्रण पर निर्भर करते हैं। इस प्रणाली का हिस्सा होने के नाते हम इंसानों पर इसका संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी है। यह हमें हमारी चर्चा के दूसरे भाग पर लाता है : हम जीवन प्रणाली को कैसे बनाए रखते हैं ? जीवन को कायम रखने की शुरुआत पारिस्थितिक तंत्र और मानव शरीर को बनाए रखने वाले नाजुक संतुलन को समझने और उनका सम्मान करने से होती है। व्यक्तिगत स्तर पर , जीवन प्रणाली को बनाए रखने का अर्थ है स्वस्थ आदतें अपनाना : संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, मानसिक स्वास्थ्य, और स्वच्छ पानी और हवा तक पहुंच।

छात्रों को

व्याख्यान देते हुए डॉ अजीत हुंडैत

बड़े पैमाने पर , इसमें पर्यावरण की रक्षा के लिए जिम्मेदार कार्य शामिल हैं। प्रदूषण को कम करने , संसाधनों का संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने जैसी स्थायी जीवन पद्धतियाँ , जैव विविधता के संरक्षण और पारिस्थितिक पतन को रोकने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हमें जलवायु परिवर्तन , वनों की कटाई और वायु , मिट्टी और जल निकायों के प्रदूषण जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग की भी आवश्यकता है। वनीकरण , टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा जैसे प्रयास न केवल पर्यावरणवाद के कार्य हैं बल्कि पृथ्वी पर जीवन की दीर्घायु सुनिश्चित करने के लिए मौलिक हैं। निष्कर्षतः , हम इसलिए जीते हैं क्योंकि जीवन स्वयं योगदान करने , जुड़ने और सृजन करने का एक गहरा अवसर है। अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य और अपने ग्रह के स्वास्थ्य दोनों को बनाए रखते हुए , हम आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन नामक इस असाधारण यात्रा की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

छात्रों

को व्याख्यान देते हुए डॉ अजीत हुंडैत

- **कबाड़ से जुगाड़ विषय पर अतिथि व्याख्यान:** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के निर्देशन में आज दिनांक 06 फरवरी 2025 को आमंत्रित अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री आलोक जोशी शासकीय कमला देवी राठी महाविद्यालय राजनादगांव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । विभागाध्यक्ष डॉ के एल दामले ने प्राचार्य एवं मुख्य अतिथि श्री अलोक जोशी जी को पुष्प कुछ देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्राचार्य महोदया ने अपने उद्बोधन में स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि आज मैं आपसे एक अत्यंत रोचक और उपयोगी विषय पर बात करना चाहती हूँ – **"कबाड़ से जुगाड़ और रीसायकल"।** यह विषय न केवल हमारी रचनात्मकता से जुड़ा है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है।हमारे आसपास रोज़ाना बहुत सारा **कबाड़** इकट्ठा होता है – जैसे प्लास्टिक की बोतलें, टिन के डिब्बे, पुराने कपड़े, टायर, टूटे फर्नीचर आदि। आमतौर पर हम इन्हें फेंक देते हैं, लेकिन यदि हम चाहें तो इसी *कबाड़ से जुगाड़* करके कई उपयोगी वस्तुएँ बना सकते हैं। उदाहरण के लिए – प्लास्टिक की बोतलों से पौधों के गमले ,पुराने टायर से कुर्सियाँ या झूले ,टूटी हुई साइकिल के हिस्सों से सजावटी सामान,और पुराने कपड़ों से थैले या कवर बनाए जा सकते हैं।यह केवल रचनात्मकता नहीं , बल्कि *रीसायकल* यानी पुनर्चक्रण की प्रक्रिया है। इससे कचरा कम होता है, प्रदूषण घटता है और प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है।आजकल **"कबाड़ से जुगाड़"** स्कूलों और कॉलेजों में एक प्रतियोगिता का रूप ले चुका है, जिससे विद्यार्थियों में नवाचार और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। श्री जोशी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आज मैं आपके समक्ष एक अत्यंत रोचक विषय **"Best from the West"** पर अपने विचार प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इस विषय का तात्पर्य है – *पश्चिम से आई श्रेष्ठतम चीजें*, यानी पश्चिमी देशों से हमने जो अच्छी बातें, तकनीकें और जीवनशैली की प्रेरणाएँ प्राप्त की हैं। पश्चिमी देशों ने विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और अनुशासन के क्षेत्र में जो प्रगति की है, वह वास्तव में सराहनीय है। आज हम जो स्मार्टफोन , इंटरनेट, आधुनिक दवाएँ, परिवहन साधन और रोबोटिक्स की दुनिया देखते हैं, वह अधिकतर पश्चिमी खोजों का ही परिणाम है। इन नवाचारों ने न केवल वहाँ के जीवन को बेहतर बनाया , बल्कि पूरे विश्व को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया है। इसके अलावा , *समय प्रबंधन*, *स्वतंत्र सोच*, *व्यक्तिगत स्वतंत्रता*, और *स्वच्छता की आदतें* – ये सभी ऐसी चीजें हैं जो हमें पश्चिम से सीखने को मिली हैं। वहां के नागरिक नियमों का पालन करते हैं, सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखते हैं और समय के मूल्य को समझते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी संस्कृति को भूल जाएँ। "Best from the West" का सही अर्थ है – *पश्चिम की श्रेष्ठ चीजों को अपनाना, परंतु अपनी जड़ों और मूल्यों को बनाए रखते हुए।* हमें वह ज्ञान, तकनीक और आदतें अपनानी चाहिए जो हमें बेहतर इंसान बना सकें , समाज को उन्नति की ओर ले जा सकें , और पर्यावरण व मानवता दोनों का सम्मान कर सकें। इसलिए, आइए हम *पश्चिम की श्रेष्ठ बातों को अपनाएँ*, और *पूर्व की आत्मा को जीवित रखें*। उक्त कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके ,डॉ माजिद अली, श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया ,श्री चिरंजीव पाण्डेय ,श्रीमती करुणा रावटे, कु. जागृति चंद्राकर सहित विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

- **NET/SET परीक्षा की तैयारी कैसे करे :** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के निर्देशन में आज दिनांक 7 फरवरी 2225 को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में डॉ यासर कुरैशी सहायक प्राध्यापक शासकीय नवीन महाविद्यालय खेरथा बाज़ार बालोद मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। विभागाध्यक्ष डॉ के एल दामले ने प्राचार्य एवं मुख्य अतिथि श्री अलोक जोशी जी को पुष्प गुच्छ देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। डॉ कुरैशी ने बताया कि आज मैं आपके समक्ष एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ – **"Life Science में NET/SET परीक्षा की तैयारी कैसे करें"।** यह परीक्षा उन विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है, जो उच्च शिक्षा, शोध कार्य या व्याख्यान के क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं। सबसे पहले, *सिलेबस को अच्छी तरह समझना* अत्यंत आवश्यक है। UGC द्वारा निर्धारित Life Science का सिलेबस व्यापक है, जिसमें बायोकेमिस्ट्री, सेल बायोलॉजी, जेनेटिक्स, इम्यूनोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, इकोलॉजी, एनवायरनमेंटल बायोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, फिजियोलॉजी, और एवलूशन जैसे विषय शामिल हैं। अंत में, धैर्य, समर्पण और अनुशासन ही सफलता की कुंजी हैं। अगर आप निरंतर अभ्यास करते हैं और आत्मविश्वास बनाए रखते हैं, तो सफलता निश्चित है। उक्त कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके, डॉ माजिद अली, श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया, श्री चिरंजीव पाण्डेय, श्रीमती करुणा रावटे, कु. जागृति चंद्राकर सहित विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के समस्त

विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

डॉ यासर कुरैशी को प्रमाण पत्र देते हुए डॉ संजय ठिसके

- **स्वास्थ्य :ऊर्जा और सफलता के विज्ञान को अनलॉक करें " विषय पर व्याख्यान :** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय , राजनांदगांव के जूलॉजी विभाग द्वारा प्राचार्य डॉक्टर सुचित्रा गुप्ता एवं विभाग अध्यक्ष निर्देशन और मार्गदर्शन में "स्वास्थ्य: ऊर्जा और सफलता के विज्ञान को अनलॉक करें " विषय पर एक महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान True Fit Disclosure हेल्थ और वेलनेस कम्युनिटी के विशेषज्ञ राजकुमार तंबोली हेल्थ कोच , मंजू तंबोली फिटनेस कोच , खुशबू तंबोली न्यूट्रीशनिस्ट और बायोटेक्नोलॉजिस्ट और गुनगुन तंबोली टेक्निकल स्पोर्ट द्वारा संचालित किया गया। इस व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों को वैज्ञानिक आधार पर "स्वास्थ्य: ऊर्जा और सफलता प्राप्त करने के प्रभावी तरीकों से अवगत कराना था। वक्ताओं ने शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक मजबूती" सामाजिक कल्याण और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ , लाइफस्पैन और हेल्थस्पैन का अंतर , और बायोलॉजिकल रिदम तथा गट हेल्थ के प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी गई। वक्ताओं ने Blue Zones (दुनिया के वे क्षेत्र जहाँ लोग अधिक दीर्घायु और स्वस्थ जीवन जीते हैं) और The Miracle Morning जैसी सिद्ध प्रभावी आदतों पर भी प्रकाश डाला। व्याख्यान के दौरान छात्रों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। रोचक उदाहरणों , वैज्ञानिक तथ्यों और व्यावहारिक सुझावों ने छात्रों को जागरूक और प्रेरित किया। व्याख्यान के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया , जिसमें छात्रों ने अपने संदेह दूर किए और विशेषज्ञों से व्यक्तिगत सलाह प्राप्त की। इस सफल आयोजन ने छात्रों को अपने स्वास्थ्य और जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया । जिससे वे स्वस्थ: ऊर्जावान और सफल जीवन जीने की दिशा में आगे बढ़ सकें। कार्यक्रम के समापन पर प्राणी शास्त्र की विभाग अध्यक्ष विभागअध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले ने वक्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा , "इस तरह के सेमिनार छात्रों के लिए अत्यंत लाभदायक होते हैं , क्योंकि वे स्वास्थ्य और सफलता को लेकर जागरूकता और सही दिशा प्रदान करते हैं।" A अंत में अतिथियों का प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया इस व्याख्यान में स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया। साथ ही डॉ संजय ठिसके , डॉ माजिद अली , श्री गुरप्रीत भाटिया , श्री चिरंजीव पाण्डेय एवं जागृति चंद्राकर सहित और अन्य स्टाफ उपस्थित थे।

श्री राजकुमार तम्बोली को प्रमाणपत्र देते हुए डॉ किरण लता दामले

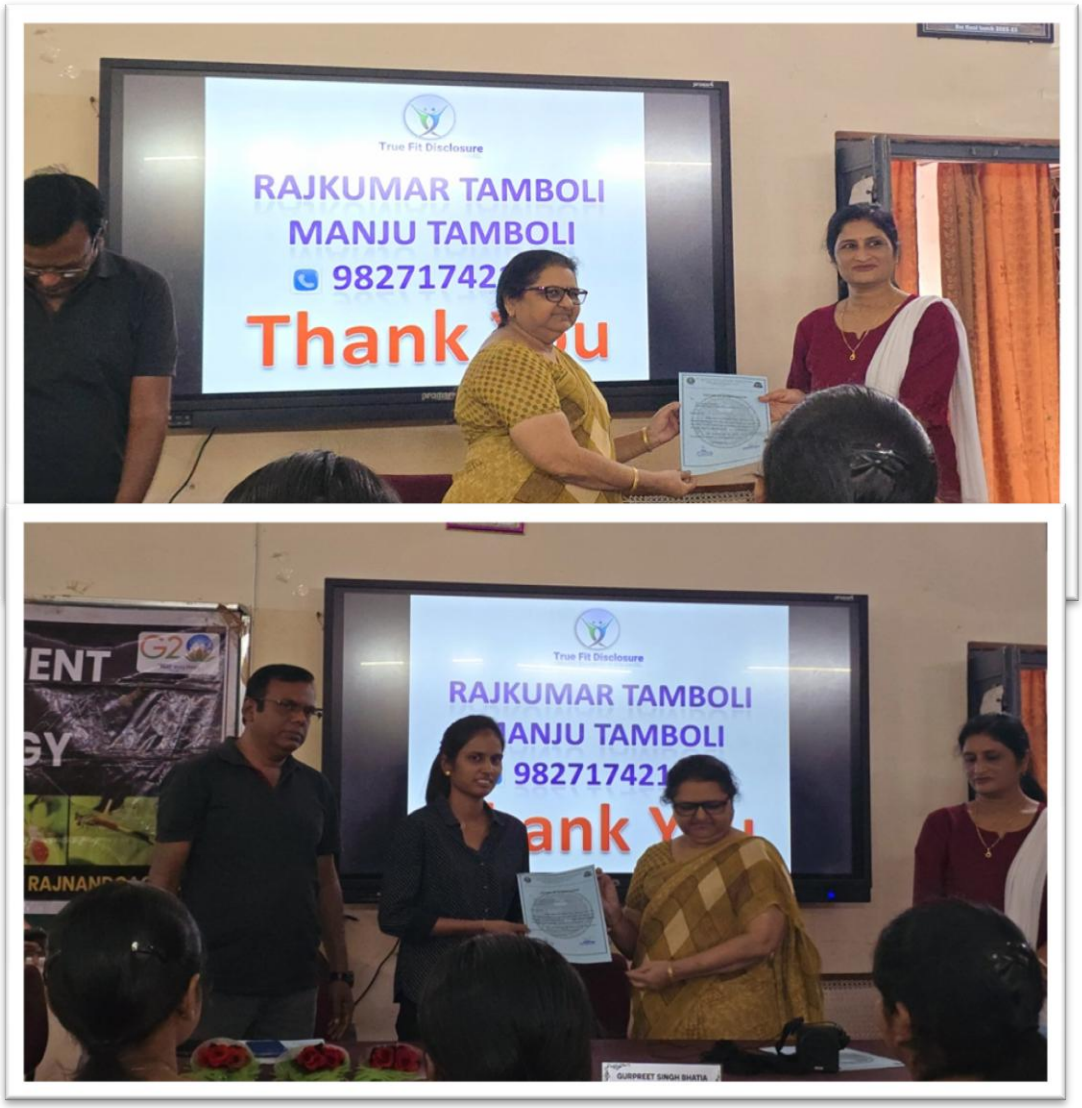

श्री तम्बोली एवं समूह को सम्मान करते हुए विभागाध्यक्ष

- **विश्व वन दिवस पर अतिथि व्याख्यान:** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के निर्देशन में आज दिनांक 21 मार्च 2025 को विश्व वन दिवस के अवसर पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर एस आर कन्नौजे शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय राजनांदगांव मुख्य अतिथि ग्रुप में उपस्थित हुए। विभागाध्यक्ष डॉ के एल दामले ने प्राचार्य एवं मुख्य अतिथि डॉक्टर से कन्नौजे को पुष्प कुछ देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्राचार्य महोदया ने अपने उद्बोधन में स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि आज हम *21 मार्च*, यानी **विश्व वन दिवस** के अवसर पर एकत्रित हुए हैं। यह दिन हमें प्रकृति के सबसे अमूल्य उपहार – *वनों* की महत्ता को समझने और उनके संरक्षण के प्रति जागरूक होने का संदेश देता है। वन न केवल पृथ्वी के फेफड़े हैं, बल्कि जैव विविधता के भंडार भी हैं। यह हमें ऑक्सीजन , ईंधन, लकड़ी, औषधियाँ और भोजन प्रदान करते हैं। साथ ही , वनों में रहने वाले जीव –जंतु और पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखते हैं। लेकिन आज तेजी से बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और उद्योगों के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। इससे न केवल जलवायु परिवर्तन हो रहा है , बल्कि अनेक वन्य जीव विलुप्त होने की कगार पर हैं। वनों का विनाश धरती के तापमान को बढ़ा रहा है, जिससे सूखा, बाढ़, तूफान जैसी आपदाएं बढ़ रही हैं। डॉ एस आर कन्नोजे ने बताया कि इस वर्ष विश्व वन

दिवस की थीम है – *"वन और नवाचार : एक बेहतर भविष्य के लिए समाधान।"* इसका उद्देश्य यह है कि हम तकनीकी नवाचारों के माध्यम से वनों का संरक्षण करें , जैसे – ड्रोन से वन निगरानी , सौर ऊर्जा आधारित वन उत्पादों का उपयोग , या जैविक खेती को बढ़ावा देना। हमें यह समझना होगा कि वन का संरक्षण केवल सरकार या पर्यावरणविदों की जिम्मेदारी नहीं है , बल्कि हम सबकी है। हम सभी को मिलकर वृक्षारोपण करना चाहिए , पेड़ों को कटने से रोकना चाहिए और बच्चों को भी पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा देनी चाहिए। अंत में , आइए संकल्प लें कि हम वनों की रक्षा करेंगे , क्योंकि "अगर वन हैं , तो जीवन है।" उक्त कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके, डॉ माजिद अली , श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया ,श्री चिरंजीव पाण्डेय ,श्रीमती करुणा रावटे , कु. जागृति चंद्राकर सहित विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

विश्व वन दिवस पर व्याख्यान देते हुए डॉ एस आर कान्नोजे

विभागीय गतिविधियाँ:

1. **वृक्षारोपण कार्यक्रम : वृक्षारोपण कार्यक्रम :** दिनांक 03.07.23 को प्राचार्य डॉ अंजना ठाकुर के मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के नेतृत्व में विभाग के समस्त प्राध्यापको एवं स्नातकोत्तर स्तर के समस्त विद्या र्थियों द्वारा सृजन संवाद परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

सृजन संवाद करते हुए एवं परिसर में वृक्षारोपण विद्यार्थी प्राध्यापक

2. **इंडक्शन प्रोग्राम :** दिनांक 12 जुलाई 2023 को इंडक्शन प्रोग्राम के माध्यम से विभाग में के प्रथम सेमेस्टर में नवप्रवेशित छात्र –छात्राओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत महाविद्यालय में चल रहे FYUGP/LOCF के पाठ्यक्रम के चयन , भविष्यक शिक्षक प्रणाली , क्रेडिट बेस्ड पाठ्यक्रम के बारे में विभाग के प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को विस्तार से जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए

विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले

3. शिक्षक दिवस एवं विद्यार्थी परिषद् का गठन : शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राणीशास्त्र विभाग में दिनांक 5 सितंबर 2025 को शिक्षक दिवस के अवसर पर विभागीय विद्यार्थी परिषद का गठन गुणानुक्रम आधार पर किया गया। संस्था के प्राचार्य डॉ अंजना ठाकुर ने विद्यार्थियों को शपथ दिला कर परिषद के गठन के औपचारिकता पूर्ण की। साथ ही प्राचार्य ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। विभाग में विद्यार्थी परिषद के अध्यक्ष के रूप में कुमारी चंचल साहू , उपाध्यक्ष कु. सुमन, सचिव कु छबि एवं सहसचिव के रूप में खिलेंद्र कुमार आल्हा ने पदभार ग्रहण किया। विभागाध्यक्ष किरण लता दामले ने नवगठित परिषद के सदस्यों को इस बात से अवगत कराया कि वे विभाग एवं महाविद्यालय के अनुशासन नियमों का पालन करते हुए विभागीय गतिविधियों में अपनी सहभागिता देने हेतु सदैव प्रतिबद्ध रहे एवं महाविद्यालय की गरिमा को बनाये रखेंगे। उक्त कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके ,डॉ माजीद अली श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया ,श्री चिरंजीव पाण्डेय,श्रीमती करुणा रावटे, महेश कुमार लाडेकर एवं स्नातकोत्तर के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस कार्यक्रम एवं विद्यार्थी परिषद् का गठन

4. स्वक्षता अभियान : दिनांक 02 अक्टूबर 2023 को विभाग के समस्त प्राध्यापको ,प्रयोगशाला तकनीशियन – परिचारक एवं स्नातकोत्तर के समस्त विद्यार्थियों द्वारा विभाग की साफ़ सफाई की गई।

5. वीमेन हेल्थ एंड हाइजीन विषय पर व्याख्यान एवं निशुल्क परामर्श कार्यक्रम : दिनांक 15 अक्टूबर 2024 को दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग , विज्ञान क्लब, रेड क्रॉस, महिला प्रकोष्ठ एवं गृह विज्ञान के संयुक्त तत्वाधान में वीमेन हेल्थ एंड हाइजीन विषय पर व्याख्यान एवं निशुल्क परामर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉक्टर अनीशा कुर्रे एमबीबीएस, मेडिकल कॉलेज पेंडरी, राजनांदगांव से उपस्थित थी। उनके साथ उनके सहयोगी डॉक्टर दीपशिखा निर्मलकर एवं डॉक्टर मऊ चटर्जी भी उपस्थित थी। कार्यक्रम में छात्राओं को महावारी स्वच्छता, सुरक्षित यौनसंबंध, परिवार नियोजन एवं गर्भाशय संबंधी बीमारियों पर विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही एचआईवी और एड्स के बारे में भी जानकारी दी गई। छात्राओं को क्यूआर कोड के माध्यम से प्रश्नावली उपलब्ध कराई गई एवं छात्राओं को प्रश्नों का सही जवाब देने पर पुरस्कृत भी किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉक्टर अंजना ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि आज की छात्राएं कल की भविष्य हैं। परिवार में प्रत्येक महिला का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है , क्योंकि महिलाएं परिवार की मजबूत नींव होती हैं। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से महाविद्यालय में समय-समय पर छात्राओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाता है। और उनके समस्याओं का समाधान किया जाता है। कार्यक्रम में डॉ किरण लता दामले , डॉ मीना प्रसाद, डॉ अंजली मोहन कोड़ोपी, प्रो करुणा रावते, तथा अन्य विभागों की महिला प्राध्यापिकाएं उपस्थित थी। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और अपने अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो वंदना मिश्रा ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ किरण लता दामले ने किया।

छात्राओं से चर्चा करते हुए डॉ. अनीशा कुर्रे (एमबीबीएस) मेडिकल कॉलेज पेंडरी, राजनांदगांव

वीमेन हेल्थ एंड हाइजीन विषय पर व्याख्यान

ादाग्वजय कालज म वामन हल्थ एड हाइजान विषय पर व्याख्यान एवं परामर्श का आयोजन

नवभारत रिपोर्टर. राजनांदगांव।

15 अक्टूबर 2024 को दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग, विज्ञान क्लब, रेड क्रॉस, महिला प्रकोष्ठ एवं गृह विज्ञान के संयुक्त तत्वाधान में वीमेन हेल्थ एंड हाइजीन विषय पर व्याख्यान एवं निशुल्क परामर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉक्टर अनीशा कुर्रे एमबीबीएसए मेडिकल कॉलेज पेंडरी राजनांदगांव से उपस्थित थी। उनके साथ उनके सहयोगी डॉक्टर दीपशिखा निर्मलकर एवं डॉक्टर मऊ चटर्जी भी उपस्थित थी। कार्यक्रम में छात्राओं को महावारी स्वच्छताए सुरक्षित यौनसंबंधए परिवार नियोजन एवं गर्भाशय संबंधी बीमारियों पर विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही एचआईवी और एड्स के बारे में भी जानकारी दी गई। छात्राओं को क्यूआर कोड के माध्यम से प्रश्नावली उपलब्ध कराई गई एवं छात्राओं को प्रश्नों का सही जवाब देने पर पुरस्कृत भी किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉक्टर अंजना ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि आज की छात्राएं कल की भविष्य हैं। परिवार में प्रत्येक महिला का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक हैए क्योंकि महिलाएं परिवार की मजबूत नींव होती हैं।

ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से महाविद्यालय में समय-समय पर छात्राओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाता है। और उनके समस्याओं का समाधान किया जाता है । कार्यक्रम में डॉ किरण लता दामलेए डॉ मीना प्रसादए डॉ अंजली मोहन कोड़ोपीए प्रो करुणा रावतेए तथा अन्य विभागों की महिला प्राध्यापिकाएं उपस्थित थी। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और अपने अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो वंदना मिश्रा ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ किरण लता दामले ने किया।

6. अन्तराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस : दिनाक 15 अक्टूबर 2024 शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राचार्य डॉ . सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले के नेतृत्व में प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा अंतरास्ट्रीय *विद्यार्थी दिवस* मनाया गया , यह दिन भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान वैज्ञानिक और 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया ' **डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम** की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। उन्होंने जीवनभर शिक्षा , युवाओं और राष्ट्र निर्माण को समर्पित किया। डॉ . कलाम मानते थे कि विद्यार्थी ही देश का भविष्य हैं और उनके सपनों को साकार करने के लिए शिक्षा सबसे प्रभावशाली साधन है।विभागाध्यक्षा डॉ दामले ने कहा कि दिन का उद्देश्य छात्रों में ज्ञान , नवाचार और नेतृत्व क्षमता को प्रोत्साहित करना है। देशभर के विद्यालयों , महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इस अवसर पर विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। महाविद्यालय में भी इस दिन को विशेष रूप से मनाया गया। प्राचार्य डॉ अंजना ठाकुर ने विद्यार्थियों को डॉ . कलाम के विचारों और उपलब्धियों से प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया। विद्यार्थियों ने उनके जीवन से संबंधित प्रसंगों पर आधारित प्रस्तुतियाँ दीं और 'सपने वो नहीं जो नींद में आएँ , सपने वो हैं जो नींद न आने दें' जैसे प्रेरणादायक उद्धरणों को साझा किया। अन्तराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस हम सभी को यह स्मरण कराता है कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार और सशक्त नागरिक बनने की दिशा में पहला कदम है।

अन्तराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस का आयोजन

7. कृत्रिम घोसला निर्माण एवं पक्षी संरक्षण हेतु किया प्रेरित : दिनांक 06 फरवरी 2025 को प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर पूर्व एवं अंतिम के विद्यार्थियों गत वर्षो की तरह भी इस वर्ष भी विभाग द्वारा चलाए जा रहे हैं विस्तार गतिविधि कार्यक्रम के अंतर्गत पक्षियों के कृत्रिम घोसला निर्माण का प्रशिक्षण स्कूली छात्रों को दिया गया। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ठेलकडीह स्कूल के छात्र –छात्राओं को घर में रखी हुई व्यर्थ वस्तुओं जैसे नारियल का छिलन, जूट की रस्सी, पराली, पुराने प्लास्टिक के डब्बे , मिट्टी के मटके आदि जिसका उपयोग नहीं होता उन सब का प्रयोग करके स्थानीय पक्षियों के लिए कृत्रिम घोसला का निर्माण किया जा सकता है।डॉ मजिद अली ने बताया कि गौरैया समेत विभिन्न प्रकार की स्थानीय पक्षियों की घटती आबादी एक वैश्विक चिंता का विषय है हमारे द्वारा पूर्व में बनाई गई बहुत से कृत्रिम घोसला घोसलों का चयन गौरैया समेत कई प्रकार की पक्षियों द्वारा किया गया है।

ठेल्काडीह स्कूल के

विद्यार्थियों को व्याख्यान देते हुए डॉ माजिद अली

8. **प्राणीशास्त्र विभाग पोषक विद्यालय संपर्क अभियान के तहत पहुंचे ठेलकाडीह :** दिनांक 06 फरवरी 2025 को शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले के नेतृत्व में प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों सहित प्राध्यापक डॉ . माजिद अली, श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया एवं श्री चिरंजीव पाण्डेय ठेलकाडीह पहुंचे। जहां उन्होंने उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा संचालित पोषक विद्यालय संपर्क अभियान एवं महाविद्यालय के विस्तार गतिविधि अग्रणी दिग्विजय कार्यक्रम के तहत शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला ठेलकाडीह पहुंचे।जहां संस्था के प्राचार्य श्रीमती गढ़पायले ने पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया। तत्पश्चात संस्था के सहायक प्राध्यापक डॉ . माजिद अली ने 11वीं एवं 12वीं कक्षा के कला विज्ञान एवं वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने विद्यार्थियों को कॉलेज के द्वारा दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की सुविधाएं जैसे लाइब्रेरी , फ्री हॉस्टल एवं विभिन्न प्रकार की दिए जाने वाले स्कॉलरशिप के बारे में भी विस्तार से समझाया साथ ही महाविद्यालय द्वारा रोजगार मार्गदर्शन एवं प्लेसमेंट कैंप के आयोजन के बारे में भी विस्तार से बताया। ज्ञात हो कि शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राज्य का एक अग्रणी महाविद्यालय है जहां 6000 से अधिक नियमित विद्यार्थी अध्यनरत है। राष्ट्रीय उच्च शिक्षा नीति 2020 के तहत हुए बदलाव के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करना उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य था। डॉ माजिद अली ने बताया कि अनूप विद्यार्थियों को अपने विषय के अतिरिक्त अभिरुचि के अनुसार अन्य विषयों को भी चुनने की आजादी देता है साथी सामान्य स्नातक विद्यार्थी यदि 75% से अधिक अंक प्राप्त करता है तो उसे चौथे वर्ष में ऑनर्स स्नातक की सुविधा मिलती है चौथे वर्ष में विद्यार्थी को रिसर्च तथा इनोवेशन की पढ़ाई करनी होती है साथ ही 4 वर्षीय ऑनर्स स्नातक को स्नातकोत्तर में 1 वर्ष की छूट मिलती है उसे केवल 1 वर्ष में पीजी की डिग्री प्रदान की जाती है|प्रोफेसर चिरंजीव पपाण्डेय ने जानकारी दी की दिग्विजय महाविद्यालय में लगभग 7:30 हजार निमित्त विद्यार्थी तथा 10000 से अधिक स्वाध्याय विद्यार्थी हैं विद्यार्थियों के लिए रोजगार मार्गदर्शन तथा कौशल प्रशिक्षण प्रकोष्ठ महाविद्यालय में संचालित है जिसके द्वारा देश की जानी –मानी लगभग 60 कंपनियों से के द्वारा समय–समय पर कैंपस का आयोजन किया जाता है इससे बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त हो रहा है प्लेसमेंट के क्षेत्र में महाविद्यालयों को रैंकिंग प्रदान करने वाली एनआईआरएफ संस्था ने दिव्या महाविद्यालय को छत्तीसगढ़ में प्रथम स्थान

दिया है। कार्यक्रम के समापन के पूर्व संस्था के प्राचार्य ने सहायक प्राध्यापक डॉ . माजिद अली को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। उक्त कार्यक्रम में संस्था के प्राध्यापक श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया ,श्री चिरंजीव पाण्डेय सहित स्नातकोत्तर पूर्व एवं अंतिम के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित रहे।

पोषक विद्यालय संपर्क अभियान के तहत ठेलकाडीह स्कूल में व्याख्यान

9. **विभाग द्वारा 03 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन :** दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगाँव के प्राणीशास्त्र विभाग के द्वारा प्राचार्य डॉ . सुचित्रा गुप्ता के कुशल निर्देशन में दिनांक 04 से 06 मार्च 2025 तक सस्टेनेबल डेवलपमेंट एवं क्लाइमेट चेंज विषय पर अंर्तराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। यह इस महत्वपूर्ण सेमिनार में देश विदेश के प्रमुख वैज्ञानिक , शोधार्थी, प्राध्यापक एवं छात्र छात्राए शामिल होने जा रहे है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजनादगांव लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री संतोष पाण्डेय होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ . सुचित्रा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के जन भागीदारी अध्यक्ष श्री अतुल रायजादा तथा कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ . आर. श्रीधर रहेंगे। कार्यक्रम की जानकारी देते हुये विभागध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने बताया कि हाइब्रिड मॉड में होने वाले इस सेमिनार के प्रथम दिन की –नोट एड्रेस का वाचन रोमानिया के वैज्ञानिक डॉ . नेमत राडू लोनेल करने वाले है जिनकी विषय विशेषज्ञता पशुपालन से सबंधित नवीनतम शोध कार्यो से है। इसी क्रम में त्रिभुवन वि .वि. काठमांडू नेपाल के प्रसिद्ध प्राणीवैज्ञानिक डा. श्याम नारायण लाभ राजनांदगांव आ रहे है जो प्राणीशास्त्र विषय में हो रही नवीनतम शोध कार्यो की जानकारी प्रदान करेंगे। डॉ . टिटुस फोन्डो अबांबे जो बेबेडा वि .वि. केमरून के लाइफ साइंस विभाग में एसोसियेट प्राध्यापक है अपने विचार मौसम परिवर्तनन विषय पर प्रस्तुत करेगें। डॉ . बी. एन. पाडें का व्याख्यान इसी तिथी को सस्टेनेबल डेवलपमेंट विषय पर होगा डॉ . पांडे सी एस .एस. बी. जर्मन इलेक्ट्रानिक सिनक्रोट्रान हैम्बर्ग जर्मनी मे वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में पदस्थ है । दिनांक 05.03.2025 को आई.सी.ए.आर. रांची के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ.. किशोर कृष्णानी, सी.पी.पी.आर.ई. सहारनपुर यू.पी. डॉ. प्रीति लाल, वैज्ञानिक डॉ. अश्विनी कुमार जो समुद्री विज्ञान संस्थान गोवा से संबंधित है। डॉ . प्रफुल्ल

काटकर विभागाध्यक्ष प्राणीशास्त्र विभाग बल्लारपुर महाराष्ट्र डॉ . मयुर मौसम फूकन सह प्राध्यापक वानिकी विभाग नागालैंड वि .वि. कोहिमा एवं डॉ . आशीष झा जो नागपुर के प्रसिद्ध हिस्लाप कालेज के प्राणीशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष है ये सभी प्राध्यापक अपने अपने विषय मे लगातार हो रहे शोध कार्यो की जानकारी देगें।तीसरे और अंतिम दिन दिनांक 06.03.2025 समापन समारोह में NEERI नागपुर (एशिया का पर्यावरण का प्रसिद्ध संस्थान है) से डॉ . . प्रंशात थावले एवं डॉ . कार्तिक रघुराजन जो जल एवं मृदा की तकनीक से संबधित प्रसिद्ध वैज्ञानिक है। समापन समारोह में विशेष रूप से आंमत्रित अतिथि डॉ बबिता लाभ कायस्थ है जो जीवन विज्ञान की प्राध्यापक है और नेपाल काठमांडू के आर्मी स्कुल की प्राचार्या है। सतत विकास वह विकास प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता नहीं किया जाता। जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है , जिसका प्रभाव पृथ्वी के पर्यावरण , पारिस्थितिकी तंत्र और मानव जीवन पर पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन है , जो औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई और जीवाश्म ईंधनों के जलने से बढ़ता है। यह ग्लोबल वार्मिंग , समुद्री जल स्तर में वृद्धि , अनियमित मौसम चक्र और प्राकृतिक आपदाओं को जन्म देता है।सतत विकास जलवायु परिवर्तन से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अंतर्गत नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन, जल विद्युत) का उपयोग, जल संरक्षण, हरित कृषि, वनीकरण और प्रदूषण नियंत्रण जैसी पहल शामिल हैं। यदि सतत विकास को अपनाया जाए , तो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है।सतत विकास और जलवायु परिवर्तन का सीधा संबंध है। यदि हम पर्यावरण की रक्षा के लिए उचित कदम उठाते हैं , तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

03 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

इस सेमिनार कि विशेष बात यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले प्राध्यापकों को राजनांदगांव की महान विभूतियों के नाम से पुरस्कार प्रदान किये जा रहे है। जो इस प्रकार है महंत राजा बलराम दास लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड, महा. प्राणीशास्त्र विभाग के विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाले प्राध्यापकों को महंत राजा सर्वेश्वर दास ऐकेडमीक एक्सीलेंस अवार्ड जो शोध कार्य में उत्कृष्ट योगदान देने वाले प्राध्यापकों को दिया जायेगा। शोध क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य करने वाले युवा शोधार्थी के लिये महंत राजा दिग्विजय दास यंग सांइटिस्ट अवार्ड तथा महिला शोधार्थियों के लिये रानी सूर्यमुखी देवी यंग महिला सांइटिस्ट अवार्ड , शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिये प्राध्यापको को पं . किशोरी लाल शुक्ला ऐकेडमीक अवार्ड , महिला प्राध्यापको के लिये डा . हेमलता महोबे ऐकेडमीक अवार्ड की प्रदान किया जा रहा है। इसी प्रकार प्राणीशास्त्र विभाग भू .पू. छात्रों के लिये द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिये डा . एन. घोष एलुमनी अवार्ड , पर्यावरण एवं समाज सेवा के क्षेत्र के लिये प्रो . व्ही तंबोली प्रकृति मित्र अवार्ड तथा शोधर्थियों के लिये प्रो. एस. आर. उबगडे रिसर्च स्कालर अवार्ड प्रदान किया गया है।

न्यूज डायरी

दिग्विजय महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

राजनांदगांव। दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राणीशास्त्र विभाग के द्वारा प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के कुशल निर्देशन में दिनांक 04 से 06 मार्च 2025 तक सस्टेनेबल डेवलपमेंट एवं क्लाइमेंट चेंज विषय पर अंतर्राष्टी[illegible]य सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। यह इस महत्वपूर्ण सेमिनार में देश विदेश के प्रमुख वैज्ञानिक, शोधार्थी, प्राध्यापक एवं छात्र छात्राए शामिल होने जा रहे है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजनादगांव लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री संतोष पाण्डेय होंगे । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता करेंगी । कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के जन भागीदारी अध्यक्ष श्री अतुल रायजादा तथा कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.

दैनिक भास्कर राजनांदगांव 04-03-2025

सेमिनार में शिरकत करेंगे कैमरून व जर्मनी के विशेषज्ञ और शोधार्थी

भास्कर न्यूज | राजनांदगांव

दिग्विजय कॉलेज के प्राणी शास्त्र विभाग में 4 से 6 मार्च तक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार होगा। इसमें देश-विदेश के विशेषज्ञ एवं शोधार्थी शिरकत करेंगे। प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट एवं क्लाइमेट चेंज विषय पर सेमिनार किया जा रहा है। इसमें देश-विदेश के प्रमुख वैज्ञानिक, शोधार्थी, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी शामिल होंगे। मुख्य अतिथि राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के सांसद संतोष पाण्डेय होंगे।

अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता करेंगी। विशेष अतिथि कॉलेज के जन भागीदारी अध्यक्ष अतुल रायजादा और कलिंगा विवि के कुलपति डॉ. आर श्रीधर रहेंगे। विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने बताया सेमिनार के पहले दिन की-नोट एड्रेस का वाचन रोमानिया के वैज्ञानिक डॉ. नेमल राडू लोनेल करेंगी। जिनकी विषय विशेषज्ञता पशुपालन से संबंधित नवीनतम शोध कार्यों से है। इसी क्रम में त्रिभुवन विवि काठमांडू नेपाल के प्रसिद्ध प्राणी वैज्ञानिक डॉ. श्याम नारायण प्राणी शास्त्र विषय में हो रहे शोध की विलस्तार के साथ जानकारी देंगे।

देशभर के वैज्ञानिक और शोधार्थी देंगे पेपर प्रेजेंटेशन

देश के अन्य राज्यों के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों के लिए 2 से 3 बजे तक पेपर प्रेजेन्टेशन का समय निर्धारित किया गया है। यहां 5 मार्च को आईसीएआर रांची के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. किशोर कृष्णानी, सीपीपीआरई सहारनपुर यूपी से डॉ. प्रीति लाल, वैज्ञानिक डॉ. अश्विनी कुमार जो समुद्री विज्ञान संस्थान गोवा से संबंधित है। डॉ. प्रफुल्ल काटकर विभागाध्यक्ष प्राणी शास्त्र विभाग बल्लारपुर महाराष्ट्र, डॉ. मयुर मौसम फूकन सह प्राध्यापक वानिकी विभाग नागालैंड विवि कोहिमा और डॉ. आशीष झा अपने विषय में शोध की जानकारी देंगे।

10. विश्व गौरैया दिवस पर गौरैया के संरक्षण के लिए दिया गया प्रशिक्षण: शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ . सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के निर्देशन में आज दिनांक 20 मार्च 2025 को अंतरराष्ट्रीय गौरैया दिवस के अवसर पर गौरैया के संरक्षण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्राचार्य महोदया ने अपने उद्बोधन में स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि घर के आंगन में सामान्य तौर पर देखे जाने वाली गौरैया अब दुर्लभ हो चली है , जिसकी चहचहाट से हम सुबह उठा करते थे वह चहचहाहट अब कहीं खो गई है। कारण कहीं न कहीं आधुनिकता के इस दौर में मानव जनित कारणों और संरक्षण के अभाव में आज उनका अस्तित्व संकट में है। विभागाध्यक्ष डॉ दामले ने बताया कि प्राणीशास्त्र विभाग वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु जागरूकता कार्यक्रम, शोध कार्य समेत विभिन्न गतिविधियों को निरंतर संचालित करता रहा है। विगत 5 वर्षों से गौरैया दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में व्याख्यान एवं कृत्रिम घोषणा निर्माण प्रशिक्षण देकर गौरैया को संरक्षण प्रदान करने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं, जिसमें बहुत हद तक सफलता भी मिली है। मुख्य वक्ता रूप के रूप में उपस्थित संस्था के पूर्व विद्यार्थी श्री थान सिंह साहू "प्रकृति मित्र" जो पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में विगत कई वर्षों से कार्यरत है गौरैया के संरक्षण पर भी व्यक्तिगत एवं राज्य स्तर पर उन्होंने सराहनीय कार्य किए हैं। पर्यावरण संरक्षण के साथ पक्षियों के संरक्षण और यूनिसेफ के पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से कार्यरत है। इस कार्यशाला में छात्रों ने उनसे पुरानी उपयोग में ना आने वाली वस्तुओं , जैसे नारियल का बुच, पुराने पट्ठे, पुराने बोरे और बांस सकी खपच्चीयों से गौरैया पक्षी के लिए घोंसला बनाना सिखा। इन घोंसलो को छात्र अपने - अपने गांव में भी लगा लगाएंगे। और ग्रामीणों को पक्षी संरक्षण के लिए के प्रति जागरूक भी करेंगे , इस बात का उन्होंने संकल्प भी लिया। इसी तारतम्य में चिड़ियों के लिए महाविद्यालय में पानी की व्यवस्था भी अन्य विभागों द्वारा की गई। उक्त कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके , श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया , श्री चिरंजीव पाण्डेय , श्रीमती करुणा रावटे, कु. जागृति चंद्राकर सहित विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

विश्व गौरैया दिवस पर

दैनिक भास्कर राजनांदगांव 22-03-2025

अच्छी पहल • विद्यार्थियों ने खुद घोंसला बनाना सीखा और दाने-पानी का इंतजाम भी किया

गौरैया के संरक्षण के लिए दिया प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | राजनांदगांव

विश्व गौरैया दिवस 20 मार्च के अवसर पर दिग्विजय कॉलेज में गौरैया चिड़िया के संरक्षण के लिए प्रशिक्षण दिया गया। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले के निर्देशन में गौरैया दिवस पर गौरैया संरक्षण विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। प्राचार्य ने कहा विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि घर के आंगन में सामान्य तौर पर देखी जाने वाली गौरैया अब दुर्लभ हो चली है। जिसकी चहचहाट से हम सुबह उठा करते थे वह चहचहाहट अब कहीं खो गई है।

ग्रामीणों को पक्षी संरक्षण के लिए के प्रति जागरूक भी करेंगे

इन घोंसलों को छात्र अपने गांव में लगाएंगे। विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि ग्रामीणों को पक्षी संरक्षण के लिए के प्रति जागरूक करेंगे। इसी क्रम में चिड़ियों के लिए कॉलेज में पानी की व्यवस्था अन्य विभागों द्वारा की गई। उन्होंने अपने घरों में आंगन और दीवार, छत पर आगामी दिनों में पड़ने वाली भीषण गर्मी में दाने और चारे की व्यवस्था करने का संकल्प लिया है। कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ संजय ठिसके, गुरप्रीत सिंह भाटिया, चिरंजीव पांडेय, करुणा रावटे, जागृति चंद्राकर सहित विद्यार्थी शामिल रहे।

कारण कहीं न कहीं आधुनिकता के दौर में मानव जनित कारणों और संरक्षण के अभाव में आज उनका अस्तित्व संकट में है।

विभागाध्यक्ष डॉ दामले ने बताया कि प्राणिशास्त्र विभाग वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए जागरूकता कार्यक्रम, शोध कार्य समेत विभिन्न गतिविधियों को निरंतर संचालित करता रहा है। विगत 5 वर्षों से गौरैया दिवस पर कॉलेज में व्याख्यान एवं कृत्रिम घोषणा निर्माण प्रशिक्षण देकर गौरैया को संरक्षण प्रदान करने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। जिसमें काफी हद तक इस प्रयास को सफलता भी मिली है।

विद्यार्थियों ने पक्षियों का घोंसला बनाने विधि सीखी

मुख्य वक्ता संस्था के पूर्व विद्यार्थी थान सिंह साहू 'प्रकृति मित्र' जो पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में विगत कई वर्षों से कार्यरत है। उन्होंने गौरैया के संरक्षण पर व्यक्तिगत एवं राज्य स्तर पर सराहनीय कार्य किए हैं। पर्यावरण संरक्षण के साथ पक्षियों का संरक्षण और यूनिसेफ के पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से कार्यरत है। इस कार्यशाला में छात्रों ने उनसे पुरानी उपयोग में ना आने वाली वस्तुओं, जैसे नारियल का बुच, पुराने पुट्ठे, बोरे और बांस की खपच्चियों से गौरैया पक्षी का घोंसला बनाना सिखा।

गौरैया के संरक्षण के कृत्रिम घोसला निर्माण प्रशिक्षण देते हुए श्री थान सिंह

11. **विश्व प्रयोगशाला दिवस** के दिन विभाग के प्राध्यापक को प्रयोगशाला तकनीशियन परिचायक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों द्वारा प्रयोगशाला के विभिन्न प्रकार के उपकरणों स्पेसिमेन आदि के साफ सफाई की जाती हैं।

मुजियम स्पेसिमेन की सफाई करते विद्यार्थी

शैक्षणिक भ्रमण :

1. **विद्यार्थियों ने किया तौरंगा जलाशय का भ्रमण:** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राचार्य डॉक्टर अंजना ठाकुर के प्रोत्साहन एवं प्राणी शास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉक्टर किरण लता दामले के कुशल मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर पूर्व एवं अंतिम के विद्यार्थियों द्वारा जिला गरियाबंद स्थित तौरंगा जलाशय का भ्रमण किया गया जहां विद्यार्थियों ने मछली पालन की बहुत सी प्रमुख विधि में से केज कल्चर द्वारा मछली पालन का अवलोकन कर प्रशिक्षण प्राप्त किया। तरंग जलाशय के मैनेजर ने जलाशय में कैग में मछली पालन किस प्रकार किया जाता है इसकी विभिन्न विधियां के बारे में विस्तार से बताते हुए कैसे कलर के उपयोगिता को बताया। साथ ही तेज ने पहले जाने वाली मछलियों के लिए के रखरखाव को भी विस्तार पूर्वक बताया। साथी उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य शासन एवं केंद्र शासन द्वारा मत्स्य पालन हेतु प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रकार की योजनाएं छठ एवं उद्यमिता विकास के लिए चलाई जाने वाली योजना के बारे में भी विस्तार पूर्वक बताया। तौरंगा जरासंध में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात विद्यार्थियों ने वहां से 20 किलोमीटर दूर स्थित प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण मैन जट में घटारानी एवं वापसी में राजीव स्थित राजीव लोचन मंदिर का भी भ्रमण किया। इस शैक्षणिक भ्रमण में विभाग के सहायक अध्यापक श्री चिरंजीव पाण्डेय एवं करुणा रौतेला सहित स्नातकोत्तर पूर्व मंत्रियों की समस्या विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

तौरेंगा जलासय में केज कल्चरका अवलोकन करते हुए विद्यार्थी

2. **जंगल सफारी एवं नंदन वन शैक्षणिक भ्रमण** : दिनांक 22 अक्टूबर 2024 को शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव कृपाचार्य डॉ के एल टांडेकर के मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण हेतु नया रायपुर अटल नगर स्थित जंगल सफारी मे जू एवं सफारी का भ्रमण किया गया। पाठ्यक्रम के अनुरूप विद्यार्थियों को नजदीकी जू में मौजूद जीवो की जानकारी एकत्र कर उसका प्रोजेक्ट बनाना है।

जंगल सफारी में विद्यार्थियों ने सफेद बाघ एशियाई सिंह , भारतीय तेंदुआ, रॉयल बंगाल टाइगर, भालू, लकड़बग्घा, सियार, भेड़िया, जंगली कुत्ता (ढोल) , लोमड़ी, गौर, वन भैंसा, वन भैंसा प्रजनन एवं संरक्षण केंद्र, सांभर, चीतल, नीलगाय, चिकारा, पिसूरी, कृष्ण मृग, काकड़, काला मुरुक बिलाव, ऊदबिलाव, साही, नेवला, पैंगोलिन, तितली उद्यान, बंदरों की विभिन्न प्रजातियां , पक्षी उद्यान, दरियाई घोड़ा, घड़ियाल, मगरमच्छ, गोह, कछुआ एवं सर्प पार्क का अवलोकन किया। उक्त शैक्षणिक भ्रमण में संस्था के सहायक अध्यापक श्रीमती करुणा रावटे, श्री चिरंजीवी पाण्डेय एवं स्नातकोत्तर पूर्व या अंतिम के सभी विद्यार्थी सम्मिलित हे।

जंगल

सफारी एवं नंदन वन का भ्रमण

जंगल सफारी एवं नंदन वन का भ्रमण

3. **चितवा डोंगरी पुरातात्विक स्थल भ्रमण:** दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राचार्य डॉ डॉ सुचित्रा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र स्नातक स्तर के बी एस सी छटवे सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा का भ्रमण किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद ज़िले में स्थित चितवा डोंगरी एक प्राचीन और ऐतिहासिक स्थल है , जो अपने शैल चित्रों (रॉक पेंटिंग्स) और पुरातात्विक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थल हमें आदिमानवों के जीवन , उनकी संस्कृति और उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति की झलक देता है। चितवा डोंगरी पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है , जहाँ चट्टानों पर बने रंगीन चित्र आज भी सुरक्षित हैं। इन शैल चित्रों में जानवरों, मनुष्यों, शिकार के दृश्य, नृत्य करते हुए लोग, और दैनिक जीवन की गतिविधियाँ दर्शाई गई हैं। चित्रों को लाल, गेरुए और काले रंग से बनाया गया है, जिनमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है।

माना जाता है कि ये चित्र हजारों वर्ष पुराने हैं और यह स्थल मेसोलिथिक (मध्य पाषाण युग) से जुड़ा हो सकता है। चितवा डोंगरी केवल एक शिल्पकला का केंद्र नहीं है , बल्कि यह पुरातत्वविदों के लिए शोध का एक महत्त्वपूर्ण स्थल भी है। यहाँ खुदाई में प्राप्त हुए पत्थर के औज़ार , बर्तन के टुकड़े और अन्य अवशेष इस क्षेत्र में प्राचीन मानव सभ्यता के होने की पुष्टि करते हैं। इससे यह साबित होता है कि इस स्थान पर कभी मानव बसाहट रही होगी। विद्यार्थियों के लिए चितवा डोंगरी एक जीवंत कक्षा की तरह है , जहाँ वे किताबों से हटकर प्रत्यक्ष रूप से इतिहास को देख और समझ सकते हैं। यह स्थल न केवल हमें हमारे अतीत से जोड़ता है , बल्कि हमें यह भी सिखाता है कि मानव ने कला और संस्कृति की शुरुआत कैसे की। निष्कर्षतः , चितवा डोंगरी एक धरोहर स्थल है जिसे संरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है। यह स्थान हमें गर्व से कहने का अवसर देता है कि हमारी भूमि पर हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के चिह्न आज भी मौजूद हैं और वे हमारे इतिहास की अमूल्य संपत्ति हैं। उक्त शैक्षणिक भ्रमण में संस्था के सहायक अध्यापक श्रीमती करुणा रावटे, श्री चिरंजीव पाण्डेय एवं स्नातकोत्तर पूर्व या अंतिम के सभी विद्यार्थी सम्मिलित हे।

चितवा डोंगरी पुरातात्विक स्थल भ्रमण

4. **चारामा स्थित शैल चित्र एवं पुरातात्विक स्थल भ्रमण :** दिनांक 24 नवम्बर 2024 दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राचार्य डॉ डॉ सुचित्रा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ . किरण लता दामले के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र स्नातक स्तर के बी एस सी छटवे सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा कांकेर जिला स्थित शैल चित्र एवं पुरातात्विक स्थल खेरखेडा –लखनपुरी का भ्रमण किया गया। छत्तीसगढ़ के कांकेर ज़िले में स्थित **खेरखेड़ा-लखनपुरी** एक महत्वपूर्ण शैल चित्र और पुरातात्विक स्थल है। यह स्थान इतिहास , कला और संस्कृति के अद्भुत संगम का उदाहरण प्रस्तुत करता है। विद्यार्थियों के लिए यह स्थल ज्ञानवर्धक होने के साथ –साथ रोमांचकारी भी है, क्योंकि यहाँ उन्हें हजारों वर्ष पुराने मानव जीवन और उनकी कलात्मकता के प्रमाण प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलते हैं। खेरखेड़ा –लखनपुरी की चट्टानों पर बने शैल चित्र आदिमानवों की जीवन शैली , उनके दैनिक कार्यों , शिकार, पशुओं और धार्मिक आस्थाओं को दर्शाते हैं। इन चित्रों को प्राकृतिक रंगों जैसे गेरुआ , लाल, पीला आदि से बनाया गया है, जो आज भी चट्टानों पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। इनमें मानव आकृतियाँ , हाथी, हिरण, सुअर, मछली और नृत्य करते लोग प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। इन चित्रों से यह अनुमान लगाया जाता है कि यह स्थल **मेसोलिथिक युग** (मध्य पाषाण काल) से संबंधित हो सकता है। यहाँ खुदाई में पाए गए पत्थर के औजार , काले और लाल मृद्भांड (मिट्टी के बर्तन) , तथा अन्य अवशेष इस क्षेत्र में प्राचीन मानव बसाहट की पुष्टि करते हैं। खेरखेड़ा–लखनपुरी का भ्रमण न केवल शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि यह हमें अपने अतीत की गहराई से पहचान करवाता है। यह स्थल हमें यह सिखाता है कि हमारी सभ्यता कितनी समृद्ध और रचनात्मक रही है। विद्यार्थियों को ऐसे स्थलों का भ्रमण अवश्य करना चाहिए ताकि वे अपने इतिहास से गहराई से जुड़ सकें। उक्त शैक्षणिक भ्रमण में संस्था के सहायक अध्यापक श्रीमती करुणा रावटे , श्री चिरंजीवी पाण्डेय एवं स्नातकोत्तर पूर्व या अंतिम के सभी विद्यार्थी सम्मिलित हे।

लखनपुरी–चारामा स्थित शैल चित्र

चारामा शैल एवं स्थित चित्र

पुरातात्विक स्थल भ्रमण

5. **दिग्विजय महाविद्यालय के विद्यार्थियों से वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने की मुलाकात :** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव के प्राचार्य डॉ डॉ सुचित्रा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र स्नातक स्तर के बी एस सी चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण हेतु नया रायपुर अटल नगर स्थित जंगल सफारी मे जू एवं सफारी का भ्रमण किया गया। पाठ्यक्रम के अनुरूप विद्यार्थियों को नजदीकी जू में मौजूद जीवो की जानकारी एकत्र कर उसका प्रोजेक्ट बनाना है। जंगल सफारी में

विद्यार्थियों ने सफेद बाघ एशियाई सिंह , भारतीय तेंदुआ , रॉयल बंगाल टाइगर , भालू, लकड़बग्घा, सियार ,भेड़िया ,जंगली कुत्ता (ढोल) , लोमड़ी, गौर, वन भैंसा , वन भैंसा प्रजनन एवं संरक्षण केंद्र , सांभर ,चीतल ,नीलगाय, चिकारा, पिसूरी,कृष्ण मृग ,काकड़ ,काला मुरुक बिलाव ,ऊदबिलाव ,साही ,नेवला, पैंगोलिन, तितली उद्यान , बंदरों की विभिन्न प्रजातियां , पक्षी उद्यान , दरियाई घोड़ा , घड़ियाल, मगरमच्छ, गोह, कछुआ एवं सर्प पार्क का अवलोकन किया। इस शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को वन्यजीवों , उनके प्राकृतिक आवासों तथा जैव विविधता के महत्व की व्यावहारिक जानकारी देना था। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सफारी क्षेत्र में स्थित शेर, बाघ, भालू, तेंदुआ तथा हिरण जैसे विविध वन्य प्राणियों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखा तथा उनके व्यवहार , जीवनशैली और आहार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों ने रेस्क्यू सेंटर, रिहैबिलिटेशन जोन एवं जू (चिड़ियाघर) का भी अवलोकन किया , जहाँ उन्होंने सरीसृपों , पक्षियों तथा जल–जीवों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में जाना। प्रशिक्षकगणों द्वारा प्राणियों के वर्गीकरण , पारिस्थितिक महत्व एवं संरक्षण प्रयासों की जानकारी विद्यार्थियों को दी गई। विद्यार्थियों ने वन्यजीवों के संरक्षण , मानव–वन्यजीव संघर्ष तथा जैव विविधता को संरक्षित करने की आवश्यकता पर भी चर्चा की। जंगल सफारी स्थित प्रशासनिक भवन एवं वेटरिनरी हॉस्पिटल एवं रिहैबिलिटेशन एवं रेस्क्यू केंद्र के उद्घाटन हेतु आए हुए छत्तीसगढ़ शासन के वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने भी विद्यार्थियों से मुलाकात कर विशेष चर्चा की। भ्रमण के दौरान प्राणीशास्त्र विभाग के प्राध्यापकगण – डॉ. संजय ठिसके, डॉ माजिद अली ,श्री चिरंजीव पाण्डेय , श्रीमती करुणा रावटे एवं अन्य ने मार्गदर्शन प्रदान किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सिद्ध हुआ। विद्यार्थियों ने वन्यजीवन के प्रति जागरूकता के साथ –साथ जैव संरक्षण के महत्व को गहराई से समझा। सभी विद्यार्थियों ने भ्रमण के अनुभव को अत्यंत रोचक एवं शिक्षाप्रद बताया। अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ . सुचित्रा गुप्ता ने इस शैक्षणिक भ्रमण की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं व्यावहारिक ज्ञान को सुदृढ़ करने में सहायक होती हैं। उन्होंने विभाग को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। उक्त शैक्षणिक भ्रमण में संस्था के सहायक अध्यापक श्रीमती करुणा रावटे, श्री चिरंजीवी पाण्डेय एवं स्नातकोत्तर पूर्व या अंतिम के सभी विद्यार्थी सम्मिलित हे।

नया रायपुर अटल नगर स्थित जंगल सफारी मे जू एवं सफारी का भ्रमण

नया रायपुर अटल नगर स्थित जंगल सफारी मे जू एवं सफारी का भ्रमण

6. **प्राणीशास्त्र विभाग के विद्यार्थियों ने किया CIFA, नंदन कानन एवं चिल्का झील का शैक्षिक भ्रमण :** संस्था के प्राचार्य डॉ सुचित्रा गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन एवं प्राणी शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के कुशल नेतृत्व में प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर पूर्व एवं अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने अंतर राज्य शैक्षिक

भ्रमण हेतु उड़ीसा राज्य के पुरी एवं भुवनेश्वर पहुंचे। जहां उन्होंने संस्था के प्राध्यापक श्री चिरंजीव पाण्डेय एवं अतिथि व्याख्याता कु. जागृति चंद्राकर के नेतृत्व में स्नातकोत्तर पूर्व एवं अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने यात्रा के प्रथम दिवस विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 01-04-25 को विद्यार्थी सर्वप्रथम भुवनेश्वर स्थित भुवनेश्वर स्थित Central Institute of Freshwater Aquaculture (CIFA) का शैक्षिक भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को संस्थान के विभिन्न अनुभागों जैसे मछली पालन तकनीकी इकाई, प्रजनन केन्द्र, जल गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला, मछली आहार निर्माण इकाई तथा अनुसंधान प्रयोगशालाओं का अवलोकन कराया गया। CIFA के वैज्ञानिकों ने विद्यार्थियों के साथ विस्तारपूर्वक संवाद किया एवं उन्हें भारत में मछली पालन के वर्तमान परिदृश्य, वैज्ञानिक मत्स्य पालन की विधियाँ, पर्यावरणीय प्रबंधन, तथा एक्काकल्चर में हो रहे नवाचारों से अवगत कराया। विशेष रूप से, इंडियन मेजर कार्प्स (कटला, रोहु, मृगल) के प्रजनन तकनीकों एवं इनकी संतुलित वृद्धि हेतु पोषण व जल गुणवत्ता की भूमिका को विद्यार्थियों ने बारीकी से जाना। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे, जिनका वैज्ञानिकों ने सरल भाषा में उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस शैक्षिक भ्रमण से विद्यार्थियों को शोध क्षेत्र में करियर विकल्पों की नई दिशा मिली एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को व्यवहारिक धरातल पर समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात नंदन कानन जैविक उद्यान (Nandankanan Zoological Park) का शैक्षिक भ्रमण किया विद्यार्थियों को नंदन कानन के विविध अनुभागों जैसे – सफेद बाघ संवर्धन केंद्र, रीपटाइल हाउस, प्राइमेट जोन, नाइट हाउस, तथा एविएरी सेक्शन (पक्षी प्रभाग) का विस्तृत अवलोकन कराया गया। नंदन कानन जू अपने जैव विविधता संरक्षण, प्रजाति संवर्धन तथा आधुनिक प्राणीशाला प्रबंधन के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। यहां पर विद्यार्थियों ने दुर्लभ वन्य प्रजातियों जैसे सफेद बाघ, भारतीय सिंह, नीलगाय, लाल पांडा, काले हिरण, मगरमच्छ, अजगर, विभिन्न प्रकार के कछुए, एवं देशी-विदेशी पक्षियों के व्यवहार और रहन-सहन को प्रत्यक्ष रूप से देखा और जाना। प्रशासनिक अधिकारियों और जैविक उद्यान के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें बताया कि नंदन कानन भारत का पहला ऐसा जू है जहाँ कैप्टिव ब्रीडिंग से सफेद बाघों का सफल संवर्धन हुआ है। उन्होंने यह भी बताया कि उद्यान में "रीहैबिलिटेशन" (पुनर्वास) केंद्र भी कार्यरत है, जहाँ घायल या बेसहारा वन्यजीवों का संरक्षण एवं पुनर्वास किया जाता है। साथ ही ऐतिहासिक व बौद्ध संस्कृति से समृद्ध स्थल धौली गिरी (Dhauli Giri) का शैक्षिक भ्रमण किया। इस शैक्षिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने धौली गिरी की ऐतिहासिक महत्ता, अशोक स्तंभ, बौद्ध स्तूप, शांति स्तूप, तथा वहां पर अंकित ब्राह्मी लिपि में खुदे शिलालेखों का अवलोकन किया। धौली गिरी वही स्थल है जहाँ सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के उपरांत हिंसा का त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाया था और 'धम्म' का प्रचार किया। यहां स्थित विशाल शांति स्तूप (Peace Pagoda) जापानी बौद्ध संस्था 'निप्पोन्जन म्योहो जी' द्वारा निर्मित किया गया है, जो विश्व शांति, करुणा और अहिंसा के प्रतीक के रूप में स्थापित है। विद्यार्थियों ने इस भ्रमण के दौरान प्रकृति और इतिहास के समन्वय को प्रत्यक्ष रूप

से देखा और समझा। शांत वातावरण , कलात्मक स्तूपों की वास्तुकला , प्राकृतिक ढलान पर बनी मूर्तियों , एवं स्थापत्य कला ने सभी को आकर्षित किया। भ्रमण ने विद्यार्थियों को बौद्ध दर्शन , धम्मचक्र प्रवर्तन, और सम्राट अशोक के विचारों से भी परिचित कराया। इस भ्रमण ने विद्यार्थियों को यह सिखाया कि कैसे ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण और संवर्धन हमारी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा में सहायक होता है। साथ ही उन्होंने सीखा कि प्राकृतिक परिवेश और सांस्कृतिक स्थलों का अध्ययन जैविक व मानवीय दृष्टिकोणों को संतुलित रूप से विकसित करने में सहायक होता है। उड़ीसा राज्य के पुरी ज़िले में स्थित चिल्का झील (Chilika Lake) का शैक्षिक भ्रमण किया। यह भ्रमण विद्यार्थियों को खारे जल की जैव विविधता , प्रवासी पक्षियों के व्यवहार, एवं पारिस्थितिकी तंत्र के व्यावहारिक ज्ञान से अवगत कराने हेतु आयोजित किया गया था। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने चिल्का झील के विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों का अवलोकन किया , जिसमें मछलियों की विविध प्रजातियाँ, प्रवासी पक्षी, कछुए, डॉल्फ़िन एवं मैन्ग्रोव वनस्पतियाँ सम्मिलित थीं। चिल्का झील , एशिया की सबसे बड़ी खारे जल की झील है, जो अपने जैविक विविधता और प्रवासी पक्षियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह झील लगभग 1100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैली हुई है और इसे रामसर साइट के रूप में अंतरराष्ट्रीय महत्व प्राप्त है। चिल्का झील मूल रूप से अपनी जैव विविधता के लिए पप्रसिद्ध है , यहां विद्यार्थियों ने इसके कई छोटे बड़े द्वीप जैसे की नलबन द्वीप जिसे पक्षी अभ्यारण घोषित किया गया है, जहां साइबेरिया मंगोलिया रूस यूरोप और अन्य ठंडे देशों से विभिन्न पक्षी भोजन एवं प्रजनन के लिए आते हैं। यहां प्रवासी पक्षी जैसे फ्लेमिंगो, पेलिकन , स्टिल्ट, प्लोवर, डक,ग्रे हेरोन, सफेद बगुला और अन्य पक्षियों का अवलोकन किया। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों ने छिलका के डॉल्फिन प्वाइंट पर जाकर झील की एक दुर्लभ प्रजाति इरावदी डॉल्फिन का भी अवलोकन किया। जो मीठे और खारे पानी के मिश्रण वाले जल क्षेत्र में पाए जाने वाली विश्व भर में दुर्लभ प्रजाति की डॉल्फिन है। चिल्का झील इस दुर्लभ डॉल्फिन का प्रमुख आश्रय स्थल है यह डॉल्फिन आकार में छोटी , गोल सिर वाली और बिना चोंच वाली होती है। जीत झील के सतपाड़ा क्षेत्र में डॉल्फिन मुख्य रूप से देखी गई।साथ ही विद्यार्थियों ने इस स्थानीय मछुआरों से उनके दैनिक जीवन मछली पकड़ने के तरीके के बारे में भी जाना। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने चिल्का झील में केकड़ा पालन कर्क कलर का भी अवलोकन किया जो वहां की महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है चिल्का झील के आसपास के मछुआरे पारंपरिक एवं वैज्ञानिक तरीके से केके का पालन करते हैं, जहां केकड़े की मुख्य प्रजाति के रूप में मड क्रैब सैला सेरेटा की खेती जाती है। स्थानीय मछुआरे ने विद्यार्थियों के केकड़े के बीच के संग्रहण पालन क्षेत्र देखभाल भोजन एवं परिपक्वता और कटाई के बारे में विस्तार से समझाया। साथी केकड़े के पेन कल्चर के बारे में भी बताया। विद्यार्थियों ने चिल्का झील में इको टूरिज्म के बारे में भी जाना जहां मंगल जोड़ी गांव स्थानीय पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है यहां स्थानीय मछुआरे इको टूरिज्म गाइड के रूप में कार्य करते हैं और आने वाले पर्यटकों को क्षेत्र की जैव विविधता के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान करते हैं। वोटिंग के दौरान विद्यार्थियों ने चिल्का झील के मंदिर वनस्पति के बारे में भी जानकारी प्राप्त की , यहां मुख्य रूप से प्रकृति प्रकार की मैंग्रोव

वनस्पति मिलती है एविसेनिया मरीना , राईजोफोरा म्यूक्रोनाटा का अवलोकन भी किया जो मिट्टी के काटो मत के साथ मत्स्य पालन को बढ़ावा देते हैं और बहुत सारे झिंगी एवं केकड़ों का घर है। चिल्का डेवलपमेंट अथॉरिटी वर्तमान में चिल्का के पारिस्थितिक तंत्र एवं जैव विविधता को संरक्षण के लिए बहुत बेहतर कार्य कर रहा है। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने झील में देखे गए पक्षियों में फ्लेमिंगो , ग्रे हेरन, स्पूनबिल, ब्राह्मणी बतख, एवं सीगल्स आदि को नजदीक से देखा और उनके व्यवहार का निरीक्षण किया। विद्यार्थियों को स्थानीय मछुआरों और जैव विविधता संरक्षण से जुड़े विशेषज्ञों से संवाद करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि चिल्का झील न केवल जैव विविधता का खजाना है , बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका का भी प्रमुख स्रोत है। विद्यार्थियों को बताया गया कि किस प्रकार झील का संरक्षण एवं सतत उपयोग किया जा सकता है। विद्यार्थियों ने मोटर बोट के माध्यम से झील के भीतर जाकर कालीजय द्वीप एवं डॉल्फ़िन पॉइंट का भ्रमण किया , जहाँ उन्हें दुर्लभ इरावडी डॉल्फ़िन के दर्शन भी हुए। यह अनुभव उनके लिए रोमांचकारी एवं ज्ञानवर्धक रहा। शैक्षणिक भ्रमण के सफल आयोजन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य डॉसुचित्रा गुप्ता ने विभाग को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत आवश्यक हैं।

चिल्का

झील

ओड़िसा

चिल्का में

झील

इरावदी डोल्फिन का दृश्य

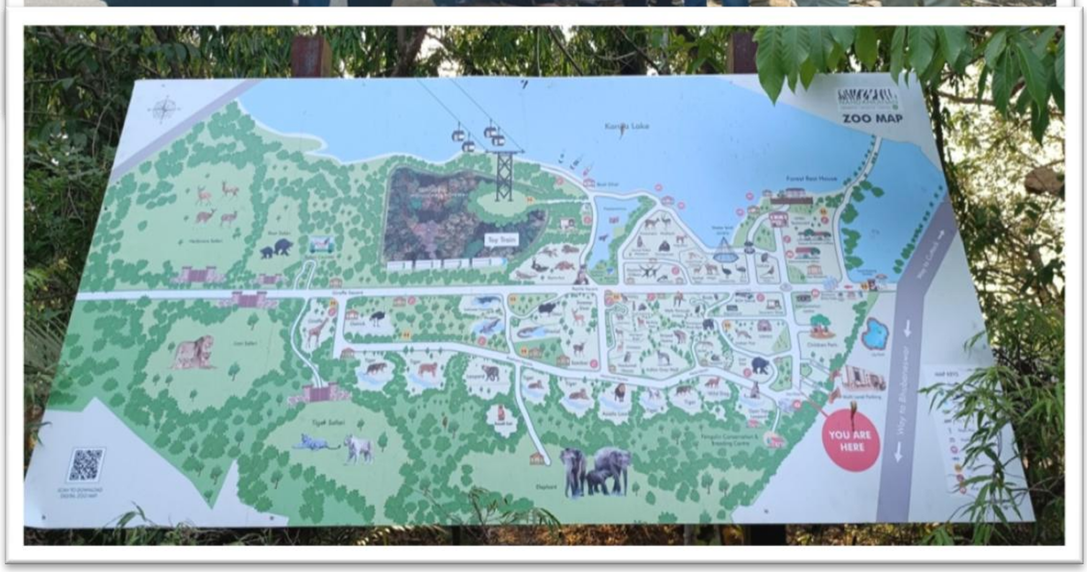

भुवनेश्वर स्थित CIFA का शैक्षणिक भ्रमण

चिल्का

झील

का

शैक्षणिक भ्रमण

जगन्नाथ

पुरी

धाम

दर्शन

विभागीय शोध कार्य गतिविधयां :- शोध के क्षेत्र में भी विभाग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही हेमचंद यादव वि .वि. दुर्ग द्वारा डॉ.संजय ठिसके एवं डॉ. माजिद अली को शोध निर्देशक के रूप में अनुमोदित किया गया। विभाग में इसी सत्र में ही RAC (DRC) समिति की बैठक के बाद शोध केंद्र भी बन चूका है ।जिसमे कुल 01 शोधार्थी पंजीकृत हुए है।

RAC

(DRC) समिति की बैठक2024-25

मूल्यांकन विधि एवं सुधार:- विधार्थियों के प्रदर्शन में सुधार लाने के लिये विभागीय प्राध्यापकों के द्वारा निम्न प्रयास किये जाते है । आन्तरिक मूल्यांकन त्रेमासिक ,अर्धवार्षिक ,एवं वार्षिक परीक्षा में जिन छात्रों का मूल्यांकन कम है उनका टेस्ट लेकर मूल्यांकन में सुधार किया जाता है ।

शोध प्रकाशन एवं अन्य प्रकाशन:-

प्राध्यापको के नाम	स्तर	सेवा में आने से लेकर अब तक अंतराष्ट्रीय/ राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय सेमीनार/ FDP/बुकचैप्टर की संख्या	प्रकशित शोध पत्रों की कुल संख्या	पढ़े गए किन्तु प्रकाशित नही हुए शोध पत्रों की संख्या	सत्र 2024-25 में पढ़े गए पत्रों की संख्या	
					प्रकाशित	पढ़े गए / संख्या
1. डॉ किरण लता दामले	अंतराष्ट्रीय	13	15	01	02	01
	राष्ट्रीय	38	-	-	-	-
	कार्यशाला	06	-	-	-	-
	FDP	08	-	-	-	-
	बुक/बुकचैप्टर	02	-	-	-	-
2. डॉ संजय ठिसके	अंतराष्ट्रीय	08	16	06	08	03
	राष्ट्रीय	10		08	-	-
	कार्यशाला	15		-	-	-
	FDP	11		-	-	-
	बुक/बुकचैप्टर	03		-	-	-
3. डॉ माजिद अली	अंतराष्ट्रीय	15	31	32	12	08
	राष्ट्रीय	43				-
	कार्यशाला	09				-
	FDP	13				-
	बुक/बुकचैप्टर	04				-
4. श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया	अंतराष्ट्रीय	05	14	04	14	02
	राष्ट्रीय	02		-	-	-
	कार्यशाला	05		-	-	-
	FDP	02		-		-
	बुक/बुकचैप्टर	02		-	-	-
5. श्री चिरंजीव पाण्डेय	अंतराष्ट्रीय	07	26	07	23	04
	राष्ट्रीय	05	-	02	-	01
	कार्यशाला	07	-	-	-	-
	FDP	05	-	-	-	02
	बुक/बुकचैप्टर	08	-	-	-	04

6. श्रीमती करुणा रावटे	अंतरराष्ट्रीय	**08**	**08**	**04**	**04**	**04**
	राष्ट्रीय	05			-	-
	कार्यशाला	06			-	-
	FDP	**07**			-	-
	बुक/बुकचैप्टर	**05**			-	-

प्राध्यापको की योग्यता एवं उपलब्धिया :

No.	Name	Qualification	Achievements
1	डॉ किरण लता दामले	M.Sc.,Ph.D	• विभागाध्यक्ष – प्राणीशास्त्र , गृहविभाग विभाग • BOS सदस्य, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग • प्रभारी प्राचार्य (03 माह) • सदस्य, अनुशासन समिति • संयोजक , 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025) • सहायक सूचना अधिकारी • सदस्य, जनभागीदारी वित्तीय समिति • 02 दिवसीय अंर्तराष्ट्रिय कांफ्रेस (6th **IYSC, Dehradun Session Chairperson**) • छात्र संघ अधिकारी
2	डॉ संजय ठिसके	M.Sc. Ph.D	• संयोजक, NAAC • संयोजक, रोजगार मार्गदर्शन एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ • संयोजक, PMUSHA • सदस्य- एंटी रागिंग समिति • Voice President of Zoological Society of Chhattisgarh An unit of ZSI (ESI-2013) • संयोजक , 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025) • Dharti Mitra Award 2024 • Acharya Chankya Award 2024
3	डॉ माजिद अली	M.Sc. Ph.D	• मुख्यमंत्री कौशलविकास (MMSVY),संयोजक • Member of Zoological Society of Chhattisgarh An unit of ZSI (ESI-2013) Registered under society Registration Act 1979 (No. 44,1979); Regd. no.

			4110, C.G. State India • सदस्य, IQAC • Organizing Secretary Science Club • Organizing Secretary Eco Club • Member of Alumni Committee • 'Best Performance Award' in state level "Youth Spark" Program received from honorable Chief Minister on Swami Vivekanand Jayanti 12-01-2018 for year 2017-18. • 'Best Performance Award' in state level "Shining Youth" Program received from honorable Chief Minister on Gandhi Jayanti 02-10-2018 for year 2018- 19. • 'Best Motivational Video' on Teachers Day 05 sep. 2020 by Govt. Hemchand Yadav university, Durg (C.G.) • Acharya Chankya Award 2024 • संगठन सचिव, 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025)
4	श्री गुरप्रीत सिंह भाटिया	M.Sc., NET	• सदस्य, IQAC • सदस्य – अनुशाशन समिति • सदस्य – भवन निर्माण समिति • सह-संयोजक, 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025)
5	श्री चिरंजीव पाण्डेय	M.Sc. SET,	• सदस्य, IQAC • सदस्य, NIRF • सदस्य, Science Club • सदस्य - रोजगार मार्गदर्शन एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ • सदस्य – कैंटीन समिति • Dharti Mitra Award 2024 • संगठन सचिव , 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025)
6	श्रीमती करुणा रावटे	M.Sc. SET	• NSS प्रभारी • सदस्य, सांस्कृतिक गतिविधि समिति • सदस्य महिला प्रकोष्ठ • सदस्य – स्वच्छता समिति

			• स्वीपनोडल अधिकारी • संयोजक , 03 दिवसीय अन्तराष्ट्रीय सेमिनार (ISSDC-2025) • सदस्य – छात्रावास महाविद्यालय • छात्रावास निगरानी समिति – परियोजना छात्रावास • छात्रावास निगरानी समिति • सदस्य– निर्धन छात्रवृत्ति समिति

- **अधोसंरचना संसाधन :–** विभाग के विधार्थीयो की ई–क्लास ,स्मार्ट क्लास, ऑडियो विज्युअल तथा इंटरैक्टिव बोर्ड द्वारा कक्षाए ली जाती है । विभाग में पूर्ण सुविधायुक्त डिग्री लैब तथा पी .जी.क्लास के साथ लैब , एक स्टाफ रूम , स्टोररूम सेमिनार हॉल व टेकनीशियन कक्ष है ।

- **महाविद्यायालय द्वारा दी गयी सुविधाओ का रख रखाव :–** प्रतिवर्ष विभाग के सभी उपकरणों ,रसायनों,मयूजियम स्पेसिमेन,स्लाइड्स आदि का भौतिक सत्यापन किया जाता है।

- **मार्गदर्शन एवं सर्वश्रेष्ठ प्रणालियाँ –**

- विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले द्वारा विद्यार्थियों को परीक्षा एवं NEP के नए पाठ्यक्रम सम्बन्धी जानकारियां दी जाती है।
- डॉ माजिद अली एवं चिरंजीव पाण्डेय द्वारा मत्स्य पालन एवं मछलियों में होने वाले रोगों की जानकारी दी जाती है ।
- डॉ. संजय ठिसके, डॉ माजिद अली एवं चिरंजीव पाण्डेय द्वारा मृदा एवं जल विशलेषण की जानकारी दी जाती है ।
- डॉ. संजय ठिसके एवं चिरंजीव पाण्डेय द्वारा विद्यार्थियों को रोजगार मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के माध्यम से रोजगार मार्गदर्शन एवं प्लेसमेंट के क्षेत्र में योगदान दिया जा रहा है।
- श्रीमती करुणा रावटे दद्वारा NSS प्रभारी के रूप में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व निर्माण में योगदान दिया जा रहा है।
- विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों द्वारा वाल मैगजीन बनाया जाता है।

-------------0-0-0---------------